ऑनलाइन व्यावसायिक विकास कार्यक्रम | कुछ विचार

निमरत खण्डपुर

सन्दर्भ

कोविड-19 महामारी शिक्षक व्यावसायिक विकास कार्यक्रमों के लिए तरह-तरह के अनुभव लेकर आई है। हालाँकि इसके कारण कहीं अधिक लोग, काफ़ी कम लागत पर प्रशिक्षण कार्यक्रमों में भाग ले पाए हैं, लेकिन कार्यक्रमों से शायद बेहतर नहीं कहा जा सकता।

पहली बात तो यह कि प्रतिभागियों की *संख्या* में नाटकीय रूप से वृद्धि हुई है - अगर छह महीने पहले कहा जाता कि आपको 400 शिक्षकों के लिए एक व्याख्यान-शृंखला संचालित करनी है तो शायद मुझे समझ नहीं आता कि यह कैसे हो पाएगा! जहाँ तक ऑनलाइन कार्यक्रमों का सम्बन्ध है, संख्याओं की एकमात्र सीमा यही है कि टेक्नोलॉजी प्लेटफ़ॉर्म कितने लोगों की *अनुमति* देता है और उस तक पहुँचने के लिए मोबाइल फ़ोन की क्षमता कितनी है। यही नहीं चैट-बॉक्स पर नज़र रखना भी मुश्किल हो जाता है, भले ही कुछ ही प्रतिभागी सवाल पूछ रहे हों या किसी विचार पर अपनी प्रतिक्रिया दे रहे हों।

दूसरी बात, ऑनलाइन प्लेटफ़ॉर्म व्यापक भागीदारी का *भ्रम* पैदा कर सकता है। चूँकि हर बार, आप जवाब देने वाले व्यक्ति को नहीं देख सकते। यदि वीडियो बन्द है या अगर प्रतिक्रिया किसी ऐसे व्यक्ति की है जो आपके सामने ग्रिड पर नहीं है या चैट सन्देश तेज़ी से आ रहे हैं और भले ही कुछ ही लोग बार-बार सुगमकर्ता को जवाब दे रहे हैं, तो भी ऐसा प्रतीत होता है कि प्रतिभागियों के मध्य एक समृद्ध चर्चा चल रही है। इस बात की पूरी सम्भावना है कि शेष प्रतिभागी प्रौद्योगिकी के मुद्दों से जूझ रहे हों या जिस विषय पर चर्चा चल रही है, उससे किसी कारणवश न जुड़ पा रहे हों। इस प्रकार, ऑनलाइन अनुभव की तुलना में फेस-टू-फेस कार्यक्रम में सुगमकर्ताओं को प्रतिभागियों की रुचि और समझ का आकलन करने में कहीं अधिक आसानी होती है और वे आवश्यकतानुसार, चर्चाओं में बदलाव कर पाते हैं।

तीसरी बात, कार्यक्रमों की *अवधि* सीमित होती है क्योंकि स्क्रीन-समय को कम-से-कम रखना होता है। हमारे अनुभव में, डेढ़ या ज़्यादा-से-ज़्यादा दो घण्टे तक प्रतिभागी और सुगमकर्ता सार्थक रूप से कार्यक्रम के साथ जुड़े रह सकते हैं।

और अन्त में एक मुख्य बात, कार्यक्रमों की *नियोजन* प्रक्रिया ही बदल गई है। फेस-टू-फेस सत्रों के सामान्यतः किए जाने वाले नियोजन से लेकर अब बहुत कड़ाई के साथ समय सीमाओं और बेहद संरचित तरीक़ों को ध्यान में रख कर नियोजन करने तक के बदलाव में समय लगा है – अब प्रत्येक क्षण की योजना बनानी पड़ती है और सत्रों को तैयार करने के लिए विस्तृत *स्टोरीबोर्ड* बनाने पड़ते हैं। अब संसाधनों को ऑनलाइन विधा के अनुरूप निर्मित किया जाना चाहिए या नए संसाधन जुटाने और/या बनाए जाने चाहिए। अर्थात फ़ेस-टू-फ़ेस कार्यक्रमों में जो लचीलापन होता है जैसे कि विषयान्तर कर सम्बन्धित क्षेत्रों पर चर्चा करना या ऐन मौके पर किसी गतिविधि को संशोधित कर लेना आदि, ऑनलाइन विधा में इस सबके बिना ही काम चलाना पड़ता है।

कार्यप्रणाली

पहले लॉकडाउन के बाद से, पिछले कुछ महीनों में कई कार्यक्रम पूर्वगामी कार्यप्रणाली के अनुसार किए गए है - कार्यक्रम के *उद्देश्यों*, मंच की प्रकृति और सुगमकर्ताओं तथा प्रतिभागियों की *क्षमता* को स्पष्ट रूप से पहचानने पर ज़ोर दिया गया। नियोजन का एक प्रमुख घटक यह है कि प्रत्येक प्रतिभागी को अपनी बात कहने का अवसर देने की कोशिश करना, भले ही यह अन्य प्रतिभागियों द्वारा न भी 'सुनी' जाए। इसके लिए न केवल भागीदारी पर नज़र रखनी होगी बल्कि व्हाट्सएप या अन्य मंचों पर सौंपे गए कार्यों से सम्बन्धित प्रस्तुतियों के माध्यम से भी इस पर ध्यान देना होगा।

यह प्रयास किया गया है कि प्रतिभागियों की संख्या फेस-टू-फेस कार्यक्रम के समान हो। लेकिन वेबिनार की बात अलग है, जिसमें वक्ता एक मुख्य विषय पर अपने विचार रखते हैं और समय-समय पर दर्शकों से सवाल या टिप्पणियाँ आमंत्रित की जाती हैं। हालाँकि वेबिनार इस अर्थ में उपयोगी हैं कि उनसे लोगों के एक बड़े समूह तक पहुँचा जा सकता है, लेकिन उनका उद्देश्य प्रतिभागियों को जानकारी देना या उन्मुख करना है न कि केन्द्रित रूप से उन्हें किसी विचार के साथ जुड़ने में मदद करना।

वैसे तो कई बार प्रतिभागियों की संख्या 30-40 तक रही है, लेकिन ऐसा भी हुआ है कि जब लगभग 200-300 प्रतिभागियों को एक ही कार्यक्रम में हिस्सा लेना था। दूसरी

स्थिति में दो तरीक़े अपनाए गए। एक तो यह कि यदि पर्याप्त संख्या में सुगमकर्ता उपलब्ध हों तो समानान्तर सत्र चलाए जाएँ, और दूसरा, वेबिनार करना, जिसके बाद प्रतिभागियों के छोटे समूहों में योजनाबद्ध तरीक़े से अन्त:क्रिया हो।

समानान्तर सत्रों के लिए 30-50 प्रतिभागियों के समूह बनाए गए हैं। समूहन के लिए अपनाए गए कुछ मानदण्ड इस प्रकार हैं : प्रतिभागियों को समूहों में बाँटने के लिए विशेषज्ञता का विषय क्षेत्र, जेंडर और जिले/स्कूल जिससे प्रतिभागी सम्बन्धित थे तथा कुछ मामलों में विभिन्न शैक्षिक योग्यता वाले लोगों का भी मिश्रण किया गया।

समानान्तर सत्रों में नियोजन और भी महत्त्वपूर्ण हो जाता है - भले ही प्रत्येक समूह के विषय क्षेत्र अलग-अलग हों, लेकिन वहाँ सुसंगतता होनी चाहिए। उदाहरण के लिए, ऐसा नहीं हो सकता कि कोई एक समूह, सामग्री और शिक्षाशास्त्र पर मुख्य रूप से ध्यान केन्द्रित करे जबकि दूसरा समूह कक्षा प्रबन्धन पर। इसलिए प्रत्येक समूह के फोकस क्षेत्र का ध्यान और आवश्यक विशिष्टता को बनाए रखते हुए, समूहों में समानता सुनिश्चित करने के लिए सुगमकर्ताओं को आपस में कई चर्चाएँ तथा योजना की पुनरावृत्ति करने की ज़रूरत पड़ती है। यह बात तब भी लागू होती है जब समूह समान विषय-क्षेत्रों को सम्बोधित कर रहे हों, क्योंकि प्रत्येक सुगमकर्ता को सत्रों की योजना बनाने और प्रतिभागियों की प्रतिक्रियाओं के आधार पर अपनी योजना को बदलने की स्वायत्तता होनी चाहिए।

निर्दिष्ट कार्य

जैसा कि पहले उल्लेख किया गया है, जब बड़ी संख्या में एक साथ सुगमकर्ता न मिल पाएँ तो प्रतिभागियों के छोटे समूहों के बीच अन्तःक्रिया करवाई जा सकती है। एक तरीक़ा यह है कि सुबह एक आम वेबिनार किया जाए जिसमें सुगमकर्ता प्रतिभागियों के लिए कोई कार्य या चर्चा के लिए प्रश्नों का सेट तैयार करें, और यदि प्रासंगिक हो तो कोई वीडियो या पढ़ने के लिए लेख साझा करें। फिर एक उपयुक्त अन्तराल के बाद, सुगमकर्ता द्वारा निर्धारित कार्य के आधार पर प्रतिभागी छोटे समूहों में चर्चा करें। चर्चा का सुगमीकरण किसी साथी प्रतिभागी द्वारा किया जाए जिसका दिए गए कार्य के लिए उन्मुखीकरण किया गया हो। यहाँ भी सुगमकर्ताओं की सहायता की गुंजाइश उपलब्ध नहीं है। अन्त में प्रत्येक प्रतिभागी विशिष्ट प्रश्नों के लिए अपनी प्रतिक्रियाओं को भेजें, जिसे सुगमकर्ता अगले सत्र में पढ़ और शामिल कर सकते हैं।

ब्रेकआउट कक्ष

दूसरा विकल्प है *ब्रेकआउट* सत्रों का उपयोग जो कुछ मंचों पर उपलब्ध है। इसमें सुगमकर्ता प्रतिभागियों को किसी कार्य के लिए उन्मुख करते हैं और फिर उन्हें 'ब्रेकआउट कक्ष' में भेजते हैं (लेकिन अफ़सोस कि यह सुविधा केवल ज़ूम पर ही उपलब्ध है)। प्रतिभागियों द्वारा जो कुछ साझा किया जाए उसका उपयोग सत्र को आगे बढ़ाने के लिए किया जा सकता है।

हालाँकि ब्रेकआउट कक्ष छोटी समूह चर्चाओं के लिए उपयोगी होते हैं, लेकिन चर्चा में समय लगता है और सुगमकर्ता के लिए एक कक्ष से दूसरे कक्ष में जाना मुश्किल होता है। स्क्रीन के समय को न्यूनतम रखने की आवश्यकता एक सर्वकालिक कसौटी है और अक्सर ब्रेकआउट कक्ष का अधिक उपयोग नहीं हो पाता। इसके अलावा, हो सकता है कि प्रत्येक समूह को अपने विचारों को प्रस्तुत करने का अवसर नहीं, मिल पाए और सत्र को थोड़ा जल्दी समेटना पड़े।

इन सभी विकल्पों को प्रतिभागियों के विभिन्न समूहों के साथ आज़माया गया और प्रतिभागियों की संलग्नता और सुगमकर्ता की सुविधा के लिहाज़ से जो विकल्प सबसे ज़्यादा सन्तोषजनक लगा, वह था 20-30 प्रतिभागियों के छोटे समूहों के साथ दिन में दो सत्रों का आयोजन करना। पहले सत्र का नेतृत्व सुगमकर्ता द्वारा किया गया, इसके बाद दिन के दूसरे सत्र में विशिष्ट कार्यों पर आधारित चर्चा हुई।

निर्दिष्ट कार्यों का बेहतर ढंग से उपयोग करना

समय का अच्छी तरह से उपयोग करने के लिए एक दिन में दो सत्रों की व्यवस्था की जा सकती है और सत्रों के बीच में प्रतिभागियों को किसी उपयुक्त कार्य के साथ संलग्न किया जा सकता है। आमतौर पर यह कार्य उन *व्हाट्सएप* समूहों पर भेजे जाते हैं, जिन्हें ख़ासतौर पर इस कार्यक्रम के लिए बनाया जाता है। यह कार्य इस अर्थ में अत्यन्त उपयोगी है कि इससे प्रतिभागी अपने सीखने की समीक्षा कर पाते हैं और यदि सम्बन्धित प्रस्तुतियाँ हैं, तो सुगमकर्ता अभी तक के ट्रांजैक्शन/कार्यों का आकलन कर पाते हैं। किन्तु फेस-टू-फेस कार्यक्रम में छोटे समूहों के सुगमीकरण से प्रतिभागियों को जितनी सहायता मिलती है या सुगमकर्ताओं द्वारा जो समर्थन मिलता है, वह इसमें सम्भव नहीं है।

जब ठोस परिणाम की अपेक्षा हो तो यह कार्य और भी महत्त्वपूर्ण हो जाता है। उदाहरण के लिए, शिक्षक-शिक्षा संस्थानों के लिए नियोजन-दस्तावेज विकसित करने के लिए एक ऑनलाइन कार्यक्रम आयोजित किया गया था। जब इस काम को सम्बन्धित लोग आमने-सामने बैठ कर करते हैं तब भी यह एक जटिल कार्य होता है। इसमें तीन स्तरों पर बदलाव की आवश्यकता होती है : सबसे पहले तो प्रतिभागियों को नीति और सर्वोत्तम अभ्यासों (best practices) की रोशनी में अपने वर्तमान कामकाज को बदलना पड़ता है; दूसरा, उन विशिष्ट कार्यों की पहचान करनी पड़ती है जो उन्हें आगामी

वर्षों में करने होंगे और; तीसरा, उन संसाधनों की पहचान करनी होती है जो इस बदलाव में मदद कर सकें। यह दृष्टिकोण शिक्षक-शिक्षा से सम्बन्धित विभिन्न प्रमुख क्षेत्रों के विशेषज्ञों के साथ बातचीत का सम्मिश्रण था और कार्यों की साझेदारी, विस्तृत टेम्पलेट्स पर आधारित थी जिसमें विशेषज्ञों के साथ-साथ साथियों के इनपुट के लिए विशिष्ट प्रश्न दिए गए थे।

कार्यक्रम के लिए आवश्यक चिन्तन हेतु प्रतिभागियों को तैयार करने के लिए एक पूर्व-कार्य के बावजूद, इस कार्य ने निर्धारित ऑनलाइन समय से अधिक समय लिया। जबकि फेस-टू-फेस कार्यक्रम में अन्तःक्रिया के लिए अधिक समय मिलता, सहकर्मियों के साथ चर्चा हो पाती और सुगमकर्ता से सहायता मिलने की भी गुंजाइश होती। इससे अधिक कार्यकुशलता से प्रतिफलों को हासिल करने में मदद मिलती।

कार्यों का उपयोग करना सुगमकर्ता पर भी बहुत दबाव डालता है, उसे सभी प्रस्तुतियाँ देखनी होती हैं, और जिन बातों पर फिर से चर्चा करने की या अलग तरीक़े से प्रस्तुत करने की आवश्यकता है, उन्हें साथ रखना होता है। साथ ही प्रस्तुतियों का व्यक्तिगत सन्दर्भ देने से प्रतिभागी भी आश्वस्त होते हैं कि उनके विचार किसी प्रकार के डिजिटल शून्य में नहीं जा रहे हैं। इसका तात्पर्य यह भी है कि कार्य जो भी हो, उसकी प्रस्तुतियाँ संक्षिप्त होनी चाहिए ताकि यह सुनिश्चित हो सके कि सुगमकर्ता उन्हें जल्दी से पढ़ लें और उनकी समझ बना सकें। इसलिए ज़रूरी है कि प्रतिभागियों के लिए सरल टेम्पलेट या प्रश्न बनाए जाएँ ताकि सुगमकर्ता उनकी टिप्पणियों और चिन्तनों को त्वरित और कुशल तरीक़े से देख सकें। हालाँकि यह प्रतिभागियों की स्वायत्तता को प्रतिबन्धित करता है, लेकिन यह समझौता करना आवश्यक है।

अपने अनुभव पर चिन्तन

टेक्नोलॉजी सम्बन्धित मुद्दे सभी कार्यक्रमों के दौरान बने रहते हैं। जहाँ सुगमकर्ताओं ने कई बार हार्डवेयर से जुड़ी परेशानियों की सूचना दी, तो प्रतिभागियों को अक्सर कनेक्टिविटी को लेकर दिक़्क़त पेश आई, जिसके कारण वे सत्रों के कुछ हिस्सों में भाग नहीं ले पाते थे। कई सत्रों में समय की बाध्यता भी रही। कुछ सुगमकर्ताओं ने महसूस किया कि उन्हें चर्चाओं को समाप्त करने या प्रतिभागियों से अधिक प्रतिक्रियाएँ पाने के लिए अधिक समय की आवश्यकता थी। 15-10 मिनट ज़्यादा होने से कुछ प्रतिभागी बैटरी की समस्या या फ़ोन के गर्म होने के कारण लॉग आउट हो गए।

कई बार संरचना की आवश्यकता और माध्यम की सीमाओं के कारण गतिविधियों को एकतरफ़ा होना पड़ता था। ब्लैक/व्हाइटबोर्ड की कमी (वैसे टेक्नोलॉजी प्लेटफ़ॉर्म पर यह विकल्प उपलब्ध होता है लेकिन इसका उपयोग करने के लिए विशेषज्ञता की आवश्यकता होती है) या समूह के काम को साझा न कर पाने के चलते प्रतिभागियों द्वारा स्वयं के अनुभवों का उपयोग करके विचारों को विकसित करने की प्रक्रिया अवरोधित हुई। कुछ समूहों में यह बात स्पष्ट रूप से नज़र आई कि ब्रेकआउट सत्रों के दौरान सुगमीकरण की कमी के कारण चर्चा भली प्रकार से नहीं हो पाई। बाद में प्रतिभागियों द्वारा साझा किए गए चिन्तनों से संकेत मिला कि वे सत्रों के दौरान जितना योगदान कर सके, वास्तव में वे उससे कहीं अधिक समृद्ध प्रतिक्रियाएँ देने में सक्षम थे।

सुगमकर्ताओं को भाव-भंगिमाएँ समझने की आदत होती है जिसका इसमें पूर्ण अभाव था। इससे कई बार यह समझना मुश्किल हो जाता था कि प्रतिभागी चर्चा को कहाँ तक समझ पा रहे हैं।

एक और मुद्दा यह था कि प्रतिभागियों को ऑनलाइन मंच का आदी होने में समय लगता था - प्रतिभागियों को तकनीकी समर्थन देने के लिए एक समर्पित व्यक्ति की आवश्यकता साफ़ नज़र आती है। सत्र के संचालन के दौरान तकनीकी के मुद्दों से निपटना सुगमकर्ता के लिए असम्भव है। इसी तरह अगर एक ही सुगमकर्ता हो तो उन्हें सत्र के संचालन में बहुत मुश्किल होती है, ख़ासकर इसलिए कि प्रतिभागी चैट फंक्शन का बहुत उपयोग करते हैं। चूँकि कंप्यूटर की विंडो में प्रतिभागियों की सीमित संख्या नज़र आती है, इसलिए हो सकता है कि 'उठाया हुआ हाथ'(Raised Hand) नज़र से चूक जाए।

यह आवश्यक है कि सुगमकर्ता एक विस्तृत योजना बनाएँ, विभिन्न टेक्नोलॉजी प्लेटफ़ॉर्म के उपयोग का अभ्यास करें और सत्र संचालन की शैली में तुरन्त बदलाव कर, ऑनलाइन विधा के अनुरूप शैली अपनाएँ। सुगमकर्ता को सावधान भी रहना चाहिए – उन्हें लग सकता है कि सब कुछ ठीक चल रहा है क्योंकि चैट की आवाज़ आती रहती है और कोई अन्य बाधा नहीं होती है (प्रतिभागी तब तक 'म्यूट' पर होते हैं जब तक कि उन्हें चर्चा में योगदान न करना हो)। पर निश्चित रूप से यह जान पाना मुश्किल है कि सभी प्रतिभागी कार्यक्रम के साथ जुड़े हुए हैं।

अन्त में, एक संरचित तरीक़े से सत्रों का समेकन करना बहुत महत्त्वपूर्ण है, क्योंकि सत्र के आख़िर में यह सभी चर्चाओं को एक साथ जोड़ता है, जिससे अगर प्रतिभागियों से कुछ छूट गया हो तो वे उसे समझ सकते हैं।

अन्तिम विचार

इस बात से कोई इन्कार नहीं है कि तकनीकी पहुँच को बढ़ाती है। एक अकेला वक्ता कई लोगों तक पहुँच सकता है, लेकिन यह भी सच है कि सार्थक बातचीत छोटे समूहों में और कुछ

समय बीतने के साथ-साथ ही सम्भव है। इसलिए अगर एक समुदाय के रूप में शिक्षक, छोटे समूहों में मिलकर कुछ सीखना चाहें तो यह एक प्रभावी साधन हो सकता है, बशर्ते कि वे समय-समय पर औपचारिक व्याख्यान या बातचीत या सामग्री बनाने जैसी गतिविधियों के लिए एक-दूसरे से वैयक्तिक रूप में भी मिलें।

इस बात का ध्यान रखना महत्त्वपूर्ण है कि इस विधा में भी रिश्ते विकसित हो सकते हैं - जब समूह छोटे होते हैं, तो कुछ दिनों में सुगमकर्ता और प्रतिभागी एक-दूसरे को जानने लगते हैं और बातचीत जीवन्त तरीक़े से होने लगती है। ऐसे समय में, जब हमें अपने जीने और सीखने के तरीक़ों में काफ़ी नाटकीय बदलाव करने पड़े हैं, तो यह जानकर ख़ुशी होती है कि मानवीय अन्त:क्रिया की प्राथमिकता अभी भी है, भले ही उसकी मध्यस्थता तकनीकी द्वारा की जा रही हो।



निमरत खण्डपुर पिछले नौ वर्षों से अज़ीम प्रेमजी फाउण्डेशन के साथ हैं। वर्तमान में वे स्कूल ऑफ कंटीन्यूइंग एजुकेशन एंड यूनिवर्सिटी रिसोर्स सेंटर, अज़ीम प्रेमजी विश्वविद्यालय से सम्बद्ध हैं जहाँ वे व्यावसायिक विकास कार्यक्रमों में योगदान देती हैं। निमरत मुख्य रूप से शिक्षा नीति, शिक्षक-शिक्षा और आकलन के क्षेत्र में कार्य कर रही हैं। उन्होंने शिक्षक-शिक्षा पाठ्यचर्या और सामग्री विकास में भी योगदान दिया है। उनसे **nimrat.kaur@azimpremjifoundation.org** पर सम्पर्क किया जा सकता है। **अनुवाद** : नलिनी रावल